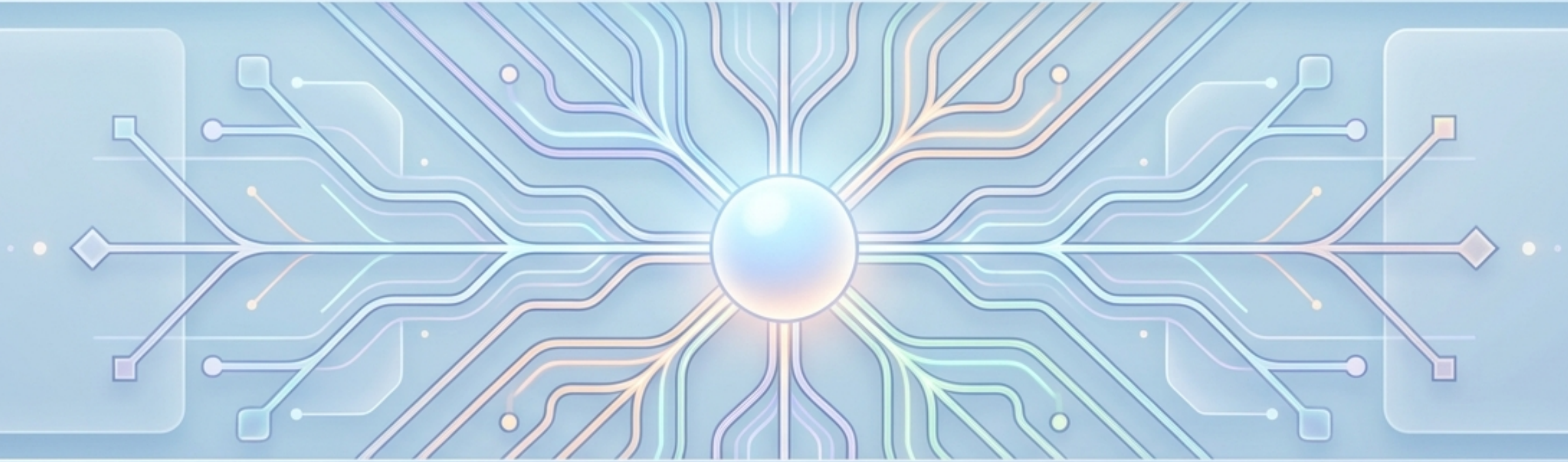


धर्म धारणा की व्यावहारिकता: जीवन साधना का विज्ञान

युग-सन्धि काल में आत्म-परिष्कार का वैज्ञानिक एवं संरचनात्मक विश्लेषण (अध्याय 4 पर आधारित)



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से –

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना और आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञारमा – सब बच्चों से कहियेगा तब पहुँचाने का क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)



युग-सन्धि काल: प्रतिभाओं के जागरण का आपातकाल

शान्ति के समय अस्त्र 'मालखाने' में रहते हैं, पर युद्ध में उन्हें निकालकर उन पर नई धार धरी जाती है। यह समय हमारी टूट-फूट को तत्परता से सुधारने का है।



Scientific Correlate: Adaptive Allostasis

जैविक प्रणालियाँ (Biological systems) संकट या युग-परिवर्तन के समय अपनी संपूर्ण संचित ऊर्जा को केवल अनुकूलन (Adaptation) और उत्तरजीविता (Survival) के लिए सक्रिय करती हैं।

प्रतिभा प्रखरता का त्रिकोण: उत्कृष्टता का समावेश



Scientific Correlate: Cognitive-Behavioral Neuroplasticity

बार-बार दोहराए गए विचार (Thoughts) मस्तिष्क के न्यूरल पाथवे को बदलते हैं, जो स्वतःस्फूर्त व्यवहार (Behaviors) और स्थायी चरित्र (Character/Physiology) का निर्माण करते हैं।

यही आपकी समर्थता, दक्षता और प्रभाव की एकमात्र कसौटी है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिवर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।””
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

अनगढ़पन की नियति: पतन का क्रमिक चक्र

अस्त-व्यस्तता
(Disorganization)

जीवनी शक्ति का हास
(Depletion of Vitality)

परनिर्भरता व उठाईगीरी
(Dependence & Begging)

बीमारियों/कठिनाइयों के
प्रति संवेदनशीलता
(Vulnerability to Illness
& Storms)

पूर्ण पतन (Complete Ruin) -
बदलते समय में अनगढ़ों का कूड़ा-
कचरा बुहार कर फेंक दिया जाएगा।

Scientific Correlate: The Law of Entropy.

ऊष्मागतिकी का दूसरा नियम (2nd Law of Thermodynamics)
- बिना सचेत ऊर्जा (Conscious Energy) के, कोई भी बंद प्रणाली
स्वाभाविक रूप से अव्यवस्था और क्षय (Disorder and Decay)
की ओर बढ़ती है।

तीन दिव्य सम्पदाएँ: विश्व-बाजार की सर्वोच्च मुद्रा

इन सम्पदाओं के बदले संसार के हाट-बाजार से कुछ भी मनचाहा खरीदा जा सकता है।



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से –

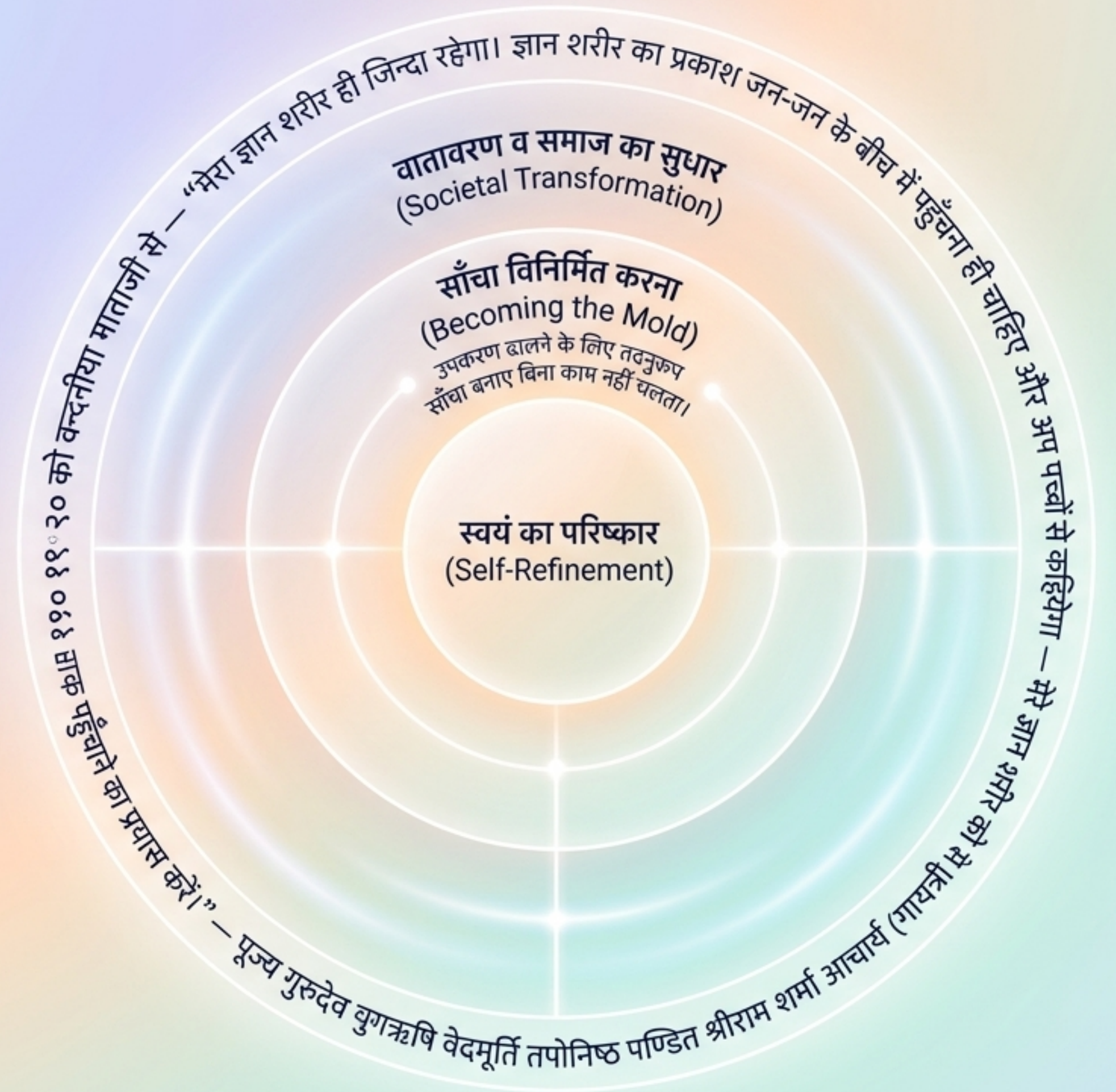
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को जो मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

– पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

📖 Scientific Correlate: Endocrine & Nervous System Optimization

Ojas = ATP/Immune efficiency. Tejas = Prefrontal Cortex optimization (Focus).
Varchas = Amygdala regulation (Fear management & courage).

बदलाव का विज्ञान: स्वयं को "साँचा" बनाना



Scientific Correlate: Mirror Neuron System

मनुष्य का न्यूरोलॉजिकल तंत्र अपने पर्यावरण में आदर्श व्यक्तियों (Exemplary individuals) के व्यवहार को मैप करता है और उनकी नकल (Imitate) करता है।

सर्वोच्च देवता की पुनपरिभाषा: जीवन देवता की उपासना

देवता अनेक हैं, पर एक देवता ऐसा है जिसकी साधना से 'नकद धर्म' (Immediate Cash-like results) मिलते हैं — वह देवता है “जीवन”। सुधरा हुआ जीवन ही असली कल्पवृक्ष है।

घड़े में ऊँट खोजना



Scientific Correlate: Internal Locus of Control

मनोविज्ञान सिद्ध करता है कि जो लोग अपने जीवन का नियंत्रण स्वयं के हाथों में मानते हैं (Internal Locus), वे बाह्य शक्तियों पर निर्भर रहने वालों की तुलना में अधिक सफल होते हैं।



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा ज्ञान शरीर का ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही ज्ञान सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि आप सबसे कहियेगा — सरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगशक्ति वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

काया-कल्प का रहस्य: इसी कलेवर में देवत्व के दर्शन

काया का आकार-प्रकार वही रहता है, लेकिन जब गुण, कर्म और स्वभाव में उत्कृष्टता का समावेश होता है, तो वह एक चमत्कार बन जाता है।

गुण (Qualities)

स्वभाव (Nature)

कर्म (Actions)

 **Scientific Correlate: Epigenetics**

डीएनए (DNA) का भौतिक ढांचा नहीं बदलता, लेकिन पर्यावरण और व्यवहार जीन की अभिव्यक्ति (Gene Expression) को बदल देते हैं, जिससे जैविक आउटपुट पूरी तरह बदल जाता है।

पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परि)  NotebookLM

साधना का विकासक्रम: समय के अनुसार बदलाव

प्राचीन काल (Ancient Era)	वर्तमान काल (Present Era)
- स्वस्थ पीढ़ी (Healthy generation) - अखाड़ों में प्रवेश (Sent to wrestling rings) - कठोर तप और योगाभ्यास (Rigorous asceticism & physical Yoga)	- रुग्ण व दुर्बल पीढ़ी (Weakened/sick generation) - अखाड़े में टिकने में असमर्थ (Cannot survive the physical ring) - स्वास्थ्य व मनोविज्ञान के सामान्य नियमों का अभ्यास (Foundational health and mental practices)



Scientific Correlate: Physiological Baseline Shift

एक रुग्ण प्रणाली पर उन्नत तनाव (Advanced stress/Yoga) लागू करने से सिस्टम फेलियर होता है।
पहले होमोस्टैसिस (Homeostasis) बहाल करना अनिवार्य है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

आध्यात्मिक शिक्षा के स्तर: शॉर्टकट का भ्रम



Scientific Correlate: Maslow's Hierarchy of Needs

आत्म-साक्षात्कार (Self-actualization) तब तक टिकाऊ नहीं हो सकता जब तक बुनियादी शारीरिक और मनोवैज्ञानिक सुरक्षा (Basic psychological safety) स्थापित न हो।

Step 1 (High School): आरम्भिक साधनाएँ (Basic Practices) - दुर्गुणों से मुक्ति, जीवनचर्या सुधारना।

Step 2 (College): उच्चस्तरीय आध्यात्मिक प्रयोग (Advanced Spiritual Experiments) - आत्मबल और सिद्धियाँ।

हाईस्कूल पास करने से पहले ही कॉलेज की योजना बनाना व्यर्थ है।

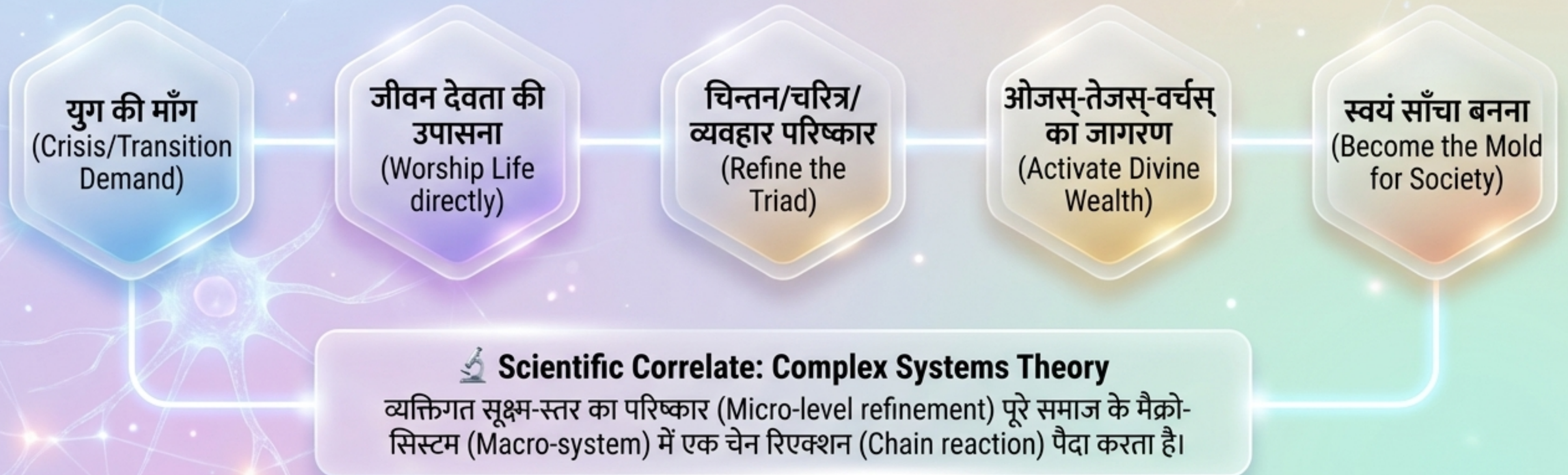
वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश
जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा
— सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को क्रान्तिधर्मी
साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

धर्म धारणा का मास्टर ब्लूप्रिंट (Synthesis)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)



आपका अगला कदम: प्रयोगशाला में प्रवेश



Assess: आत्म-निरीक्षण करें
— क्या आप अस्त-व्यस्त जीवन जी रहे हैं या जीवनी शक्ति का संचय कर रहे हैं?



Refine: चिन्तन, चरित्र और व्यवहार में आज से ही एक छोटा उत्कृष्ट बदलाव लाएँ।



Ground: उच्चस्तरीय चमत्कारों की लालसा छोड़कर, 'हाईस्कूल' स्तर की बुनियादी जीवन-साधना में महारत हासिल करें।



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

